Lecture No - (02)

Name of the college - APSM College, Barauni, Begusarai.
Name — Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt — AIH&C
Lession/plan — B.A. AIH&C (H), part-I, paper-1
Name of Topic — India descriptions of Albrauni
Date - 12-04-2021

अलबरूनी का भारत-वर्णन :—

अलबरूनी खीवा का निवासी था और महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। अलबरूनी का पूरा नाम अबु रैहान मुहम्मद इब्न अहमद अथवा (अलबरूनी) था। उसका जन्म मध्य एशिया के उज्बेकिस्तान के ख्वारिज्म (खीवी) में हुआ था। उसके जन्म की तिथि 973 का एक फारसी लेखक था। इनकी अनेक रचनाएँ मातृभाषा फारसी में हैं। 1017 ई० को महमूद गजनवी द्वारा ख्वारिज्म पर आक्रमण और अधिकार करने के बाद अलबरूनी एक युद्धबंदी के रूप में गजनी ले जाया गया। गजनी में ही उसके जीवन का अधिकांश भाग व्यतीत हुआ। सुल्तान महमूद गजनवी के शासन काल में 1030 ई. में उसने अपनी विख्यात पुस्तक किताबुल-हिंद (तहकीके हिंद) की रचना की, परन्तु इस पुस्तक में सुल्तान महमूद के कार्यकलापों का पूरा विवरण नहीं दिया गया है।

भारतीय इतिहास के लिए किताबुल-हिंद एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह 80 अध्यायों में विभक्त है। अलबरूनी का विवरण महमूद गजनवी के भारतीय आक्रमण से पूर्व अथवा 11वीं शताब्दी के

PTO

भारतीय सामाजिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। अलबरूनी भारतीय समाज की मुख्य विशेषता, वर्णव्यवस्था का विस्तार से उल्लेख करता है। उसके अनुसार भारतीय समाज 4 वर्णों में विभक्त था। सर्वोच्च जाति (वर्ण) ब्राह्मणों की थी।

अलबरूनी के अनुसार, पराशर के पुत्र व्यास ने हिंदी के वर्णमाला की खोज की थी। इसमें 50 अक्षर थे। वह बहुत बड़ा विद्वान था। उसने यहाँ गणित और ज्योतिष का अध्ययन किया था। उसने अपनी पुस्तक (तहकीके-हिंद) नामक पुस्तक में लिखा है कि भारतीय जीवन में संकीर्णता का प्रवेश हो चुका था। सामाजिक जीवन ऊँच-नीच के विचार उपजे थे वे परस्पर - जात-पात के रूप में रूढ़ हो चुके। खान-पान जात-पात का इतना महत्व दिया जाने लगा था कि लोग अपनी भूमि स्वतंत्रता और देश भाइयों को भी न्योछावर करने लगे थे।

अलबरूनी लिखते हैं - कि - "मैंने कई बार सुना है कि जब युद्ध में कैद हुए हिन्दू छूटने के बाद अपने देश और धर्म में वापस जाते हैं, तब हिन्दू उन्हें प्रायश्चित के रूप में उपवास करने का आदेश देते हैं। फिर वे उन्हें गोबर - मूत्र और दूध में नियत दिनों तक खाये रखते हैं। फिर उन्हें वही मल खिलाते हैं। हिन्दुओं को इस बात की इच्छा नहीं होती की जो वस्तु एक बार अशुद्ध हो गई। उसे शुद्ध कर पुनः ग्रहण कर लें।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

मूर्खता ऐसा रोग है, जिसकी कोई दवा नहीं है। हिन्दुओं का विश्वास है कि उनके समान कोई जाति, कोई सम्राट, कोई धर्म, कोई विद्या नहीं। उनके पूर्वज ऐसे विचारवाले नहीं थें। ..., ईरान आदि के पूर्वज ऐसे संकुचित विचार के नहीं थें। अलबरूनी के विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि उस समय पतित मनुष्य को जाति में फिर से मिलाने का रिवाज हिंदुओं के यहाँ नहीं था। देवलस्मृति में इसका विधान है। यद्यपि इसका व्यवहारिक रूप क्या था, कहना कठिन है। अलबरूनी के अनुसार, भारतीय उग्र स्वभाव के होते थें और विदेशीयों को मलेच्छ कहकर पुकारते थें। वे मूर्तिपूजक भी थें और उनके मंदिरों में अपार धनराशि थी। उसने बाल-विवाह का भी उल्लेख किया है। सतीप्रथा उस समय भी प्रचलित थी। विधवाओं का पुर्नविवाह नहीं होता था। विवाह में माता-पिता की स्वीकृति आवश्यक थी। विदेशियों से भारतीय संपर्क स्थापित करना हिन्दू नहीं चाहते थें। देश छोटे-छोटे टुकड़े यानि कि राज्यों में बंटा था और वे राज्य आपस में बराबर लड़ा करते थें। और एक-दूसरे से ईर्ष्या-द्वेष भाव रखते थें। कश्मीर, मालवा, सिंध, कन्नौज, बंगाल आदि बड़े राज्य थें। राजा प्रजा से षड्भाग (1/6) लिया करता था। ब्राह्मणों को प्राणदंड नहीं दिया जाता था। अलबरूनी ने कई मेलों का भी उल्लेख किया है। विदेशियों के लिए मंदिर आकर्षण केन्द्र थें, क्योंकि वहाँ अपार धनराशि रहती थी। मंदिरों को लूटने वालों में मुसलमानों के अतिरिक्त हिन्दू भी सम्मिलित थें। ब्राह्मण लोग खुद इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं थें। परन्तु वे ही अन्य वर्णों के लिए कहा करते थें कि ऐसे व्यक्ति के लिए कोई भी प्रायश्चित संभव नहीं, जो एक बार बंदी हो चुका हो। पर्दा-प्रथा नहीं थी। विवाह लड़कियों के लिए कोई भी प्रायश्चित संभव नहीं, जो एक बार बंदी हो चुका हो। पर्दा प्रथा नहीं थी। विवाह लड़कियों के P.T.O.

Scanned with CamScanner

सयानी होने पर होता था। शिक्षा का प्रसार भी स्त्रियों में था।

अलबरूनी महमूद गजनवी के दरबार में रहता था। और उसी के साथ भारत आया था। उसकी प्रसिद्ध पुस्तक का नाम किताबुलहिंद। वह भारतीय भाषा और प्राचीन भारतीय साहित्य का बहुत बड़ा विद्वान था। भारत के प्रति उसके मन में अगाध श्रद्धा थी। वह अपने समय के भारत का वर्णन करने में बड़ा ही समर्थ रहा है। वह संस्कृत, गणित, ज्योतिष आदि विषयों का ज्ञाता था।

अलबरूनी ने वैदिक धर्मावलम्बियों का हिन्दू नाम से उल्लेख किया है, और कहा है कि वे लोग एक ईश्वर को मानते थे। और अनंत, अनादि, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी समझते थे, तथा उसकी मूर्ति नहीं बनाते थे। अनेक देवताओं की मूर्तियों का उपयोग अशिक्षितों, अथवा अल्पज्ञों के लिए ही था। विदेशियों को हिन्दू मलेच्छ कहते थे। वेदांत के प्रभाव से सूफी मत का प्रचलन हुआ, और उसके साथ अनलहक (अहंब्रह्मास्मि) की तरह का प्रतिपादन भी। इनके ही आचार्य थे, ख्वाजा मुईनुद्दीन, जिनकी समाधि आज भी अजमेर में विद्यमान है।

अलबरूनी के अनुसार वैश्य और शूद्र वेद सुन भी नहीं सकते थे, पढ़ना तो दूर था। श्रीमद्भागवत गीता में वैश्यों और स्त्रियों को शूद्रों के साथ पापयोनि कहा गया है। अलबरूनी के अनुसार यहाँ तलाक अज्ञात था। पुरुष एक से अधिक विवाह कर सकता था। वे शिक्षा से वंचित रहती थी और छोटी उम्र में ही उनका विवाह कर दिया जाता था। मंदिरों में देवदासी के रूप में युवतियाँ रखी जाती थी। राजा लोग इन युवतियों को मंदिरों में इसलिए रखते थे कि इनके आकर्षण से रसिक लोग अधिक संख्या में आकर भेंट चढ़ाएँ, जिससे राज्य के कोष में वृद्धि हो। सोमनाथ के मंदिर में उस समय 350 देवदासियाँ थी। अलबरूनी के अनुसार वाराणसी और कश्मीर में हिन्दुओं महिलाओं का अधिष्ठान था।

हिन्दू शिल्प-चातुर्य की प्रशंसा करते हुए लिखता है- "हिन्दू प्रत्येक पवित्र स्थल में स्नान के लिए कुंड बनवाते थे, इनमें उनकी कला इतनी उच्चकोटि की है कि मुसलमान जब उनको देखते हैं तब आश्चर्य करते हैं। उनका बनाना तो दूर रहा, वे उनका वर्णन भी नहीं कर सकते हैं।"

P.T.O

"गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में अलबरूनी अपने को भारतीयों का ऋणी मानता है।" वह लिखता है — "वह लिखता है — "मैंने अनेक जातियों के लोगों के संख्याक्रमों के नाम सीखे हैं। परंतु मैंने किसी जाति में भी हजार के आगे के लिए कोई नाम नहीं पाया। केवल हिन्दू ही अपनी गणना - विधि में हजार के आगे जाते हैं। उनके संख्याक्रमों के नाम अठारह अंकों की संख्या तक पहुँचते हैं। जिसे वे परार्ध कहते हैं।"

भारती कुमारी
A.I.H.-2 C
12-04-2021